International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 24-07-2020; Accepted: 09-08-2020; Published: 25-08-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 112-113

साहित्य का इतिहास दर्शन और नलिन विलोचन शर्मा की इतिहास दृष्टि

अनीता
एम० फिल. हिन्दी, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

नलिन विलोचन शर्मा ने आलोचना के साथ साथ साहित्य के इतिहास दर्शन पर भी विचार किया। उन्होनें यह काम उस समय किया था, जब हिन्दी में 'इतिहास दर्शन' शब्द से बहुत कम लोग परिचित थे। नलिन जी ने साहित्य के इतिहास दर्शन पर विचार अपनी पुस्तक 'साहित्य का इतिहास दर्शन' (1960) में किया है। इस किताब के माध्यम से उन्होंने साहित्य के इतिहास लेखन के समक्ष इतिहास दर्शन का सवाल उठाया। सवाल उठाने के साथ उन्होंने साहित्य के इतिहास लेखन के लिए संतुलित इतिहास दृष्टि पर भी जोर दिया। पाश्चात्य विचारकों के अनुसार हिन्दी साहित्य के जो इतिहास – ग्रंथ लिखे गए हैं उनमें इतिहास की भारतीय दृष्टि की कमी है। नलिन जी ने इतिहास–विषयक पाश्चात्य दृष्टि का विरोध किया और साथ ही उन्होंने कहा कि भारतीय साहित्य में न इतिहास की कमी है और न इतिहास दृष्टि की।

नलिन विलोचन शर्मा के अनुसार 19वीं सदी में इतिहास लेखन की जो पद्धति पश्चिम में मौजूद थी उससे भारतीय पद्धति सर्वथा अलग थी। पश्चिम में उस समय में स्वीकार किए गए प्रतिमानों के सहारे पाश्चात्य विचारकों ने न तो भारतीय साहित्य और कलाओं के साथ न्याय कर सके और न ही यहाँ के प्राचीन लेखन पद्धति की विशेषताओं को समझ पाए। नलिन जी इतिहास लेखन के क्रम में मिथकों और किंवदंतियों को महत्त्वपूर्ण मानते है ओर उन्हें एकत्रित करने का आग्रह भी करते है। उनके अनुसार किंवंदतियाँ साहित्य के इतिहास का सबसे बड़ा आधार है। उन्होंने किंवंदतियों के साथ ही लोकवार्ताओं को भी महत्त्वपूर्ण माना है। नलिन जी ने साहित्य के इतिहास में गौण लेखकों की उपेक्षा की ओर संकेत किया है। इसके लिए उन्होंने शोध–निर्देशकों एवं शोधार्थियों को जिम्मेदार ठहराया है।

'साहित्य का इतिहास दर्शन' में नलिन जी ने जब भारतीय इतिहास दृष्टि पर बल दिया है। तो इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने पाश्चात्य इतिहास दृष्टि को एकदम से नकार दिया है। उन्होंने जहाँ एक ओर भारतीय इतिहास की पारम्परिकता को स्वीकार किया है वहीं दूसरी ओर पाश्चात्य इतिहास की आधुनिकता को भी आवश्यक माना है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन पर विचार करते हुए उन्होंने आचार्य रामचंद्र शुक्ल के सुव्यवस्थित इतिहास की प्रशंसा भी की है और साथ ही उन पर विधेयवादी होने का आरोप भी लगाया है।

नलिन विलोचन शर्मा नें 'साहित्य का इतिहास दर्शन' की 'भूमिका' में साहित्य के इतिहास दर्शन का स्वरूप स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि 'साहित्येतिहास भी, अन्य प्रकार के इतिहासों की तरह कुछ विशिष्ट लेखकों और उनकी कृतियों का इतिहास न होकर युग–विशेष के लेखक–समूह की कृति समष्टि का इतिहास ही हो सकता है।'(2) आगे नलिन जी ने 'साहित्य का इतिहास दर्शन' का मूल उद्देश्य भी स्पष्ट किया है। वे लिखते हैं कि भारतीय साहित्यों के अन्तः संयुक्त इतिहास के निर्माण का प्रयास कैसे संभव हो सकता है। अतः इतिहास की संभाव्यता और वांछनीयता का निर्देश दिखाना इस पुस्तक का मूल उद्देश्य है। 'इतिहास दर्शन–भारतीय दृष्टिकोण' इस अध्याय में नलिन जी ने पाश्चात्य विचारकों का भारतीयों के प्रति संकुचित दृष्टिकोण की ओर संकेत किया है। क्योंकि पाश्चात्य विचारकों के अनुसार भारतीयों में इतिहास दृष्टि का अभाव है। इस विचार पर संदेह व्यक्त करते हुए उन्होंने इसका खण्डन किया। भारतीयों में इतिहास दृष्टि होने का प्रमाण कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' का उदाहरण देकर किया। इतिहास का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। पाश्चात्य विचारकों ने भारतीयों के प्राचीन किंवदंतियों और लोकवार्ता को इतिहास ग्रंथ का अंग नहीं माना है। नलिन विलोचन शर्मा ने इसका खण्डन करते हुए किंवदंतियों और लोकवार्ताओं को इतिहास का सबसे बड़ा आधार माना है।

'इतिहास दर्शन–पाश्चात्य आदर्श' अध्याय में नलिन जी ने पाश्चात्य में इतिहास के संबंध में हुए विवादों की ओर संकेत किया है। विवाद यह था कि इतिहास विज्ञान है या कला ? इस सवाल पर अनेक पाश्चात्य विचारकों ने विचार किया है। इन विचारों की समीक्षा करते हुए नलिन जी ने भी लगभग पाँच सवालों को उठाया है –

1. इतिहास यदि विज्ञान है तो किस प्रकार का विज्ञान है ?
2. इतिहास किन वस्तओं का अन्वेषण करता है ?
3. इतिहास की विषय–वस्तु क्या है ?
4. ऐतिहासिक अन्वेषण का लक्ष्य क्या है ?
5. विज्ञान के रूप में इतिहास की प्रक्रियाएँ क्या है ?

'साहित्य इतिहास की प्राचीन भारतीय परम्परा' इस अध्याय में उन्हें संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंरा आदि में भारतीय इतिहास की परम्परा की खोज की है। नलिन जी ने भारतीय साहित्येतिहास में तिथिक्रम में संदिग्धता का आरोप पाश्चात्य विचारकों पर लगाया है। अपनी इस किताब में उन्होंने गौण कवियों और उनकी जीवनी संबंधी एक लम्बी सूची प्रस्तुत की है। 'पाश्चात्य साहित्यिक दर्शन : प्राचीन और आधुनिक' अध्याय में उन्होंने पाश्चात्य साहित्यिक दर्शन के प्राचीन और आधुनिक विचारकों के विचारों की समीक्षा की है। साहित्यिक इतिहास क्या है ? इस पर विचार करते हुए लिखते हैं कि प्रायः इतिहास को नामों की तालिका मान लिया जाता है लेकिन वह नामों की तालिका न होकर साहित्यिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है। पाश्चात्य साहित्यिक दर्शन की समीक्षा करते हुए लिखते हैं कि अधिकतर साहित्य के इतिहास या तो सभ्यता के इतिहास हैं या आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह है। साहित्यिक इतिहास लेखन के समय उठने वाले सवालों की ओर संकेत करते हुए वे लिखते हैं कि 'युग का इतिहास, विचारधारा, वास्तविक शैलीगत परिवर्तन, मनुष्य के विभिन्न क्रिया–कलाप के साथ युग का संबंध अन्य देशों के समान युगों का संबंध आदि पर सवाल उठायें जा सकते हैं।'

'साहित्येतिहास और विधेयवाद' अध्याय में विधेयवादी पद्धति की शुरूआत और उसकी अवधारणा (कार्य–कारण संबंध) पर विचार

किया है। इसके अलावा उन्होंने पाश्चात्य साहित्यिक दर्शन–जर्मनी, फ्रेंच , अंग्रेजी, रूसी, पोलिश और चेक पर विस्तार से विचार किया है।

'हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन' अध्याय में नलिन जी ने हिन्दी में साहित्येतिहास लेखन की परम्परा पर विचार करते हुए गार्सा–द–तासी से लेकर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तक के साहित्येतिहास लेखन की समीक्षा की है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की शुरूआत फ्रेंच विद्वान गार्सा–द–तासी द्वारा हुआ उनकी किताब 'इस्तवार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ए ऐन्दुस्तानी' है, जो कि फ्रेंच भाषा में है। इसमें हिन्दी और उर्दू के अनेक कवियों का विवरण है। इसका पहला भाग 1839 तथा दूसरा भाग 1847 ई० में प्रकाशित हुआ था। इसकी समीक्षा करते हुए नलिन जी लिखते हैं कि इसमें कवियों के विवरण काल–क्रम के स्थान पर रोमन वर्ण–क्रम द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इतिहास लेखन की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए शिवसिंह सेंगर ने 'शिवसिंह सरोज' (1883) नाम से किताब लिखी। इसकी समीक्षा करते हुए नलिन जी लिखते हैं कि इसमें कवियों का जीवन चरित्र और उनकी कविताओं का उदाहरण मात्र प्रस्तुत किया गया। इसके करीब छः वर्ष बाद भाषाविद् जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 'मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तानी' (1889) नाम से किताब लिखी इसमें काल–विभाजन और साहित्यिक प्रवृत्तियों का थोड़ा–सा परिचय दिया गया है। सन् 1929 ई० में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखा। नलिन जी ने इस इतिहास को सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक मानते हुए इसकी प्रशंसा की थी लेकिन आचार्य रामचंद्र शुक्ल पर विधेयवादी होने का आरोप भी लगाया। उन्होंने रमाशंकर 'रसाल' की इतिहास–पुस्तक की भी समीक्षा की है। नलिन जी ने आचार्य हजारी प्रसार द्विवेदी जी के इतिहास–लेखन को सर्वाधिक साहित्यिक माना हैं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की पुस्तकों–'हिन्दी साहित्य की भूमिका' और 'हिन्दी साहित्य का उद्भव एवं विकास' की समीक्षा उन्होंने की।

'हिन्दी के गौण कवियों का इतिहास' अध्याय में उन्होंने हजारा साहित्य के महत्त्व को स्पष्ट किया है। साथ ही शोधकर्त्ताओं से उम्मीद भी की है। कि हजारा साहित्य को उपेक्षित होने से बचाया जाए। उन्होंने इस पुस्तक में हजारा साहित्य के सैकड़ो साहित्यकारों की एक लम्बी सूची तैयार की है। जिन्हें 'नख–शिख हजारा' भी कहा जाता है। इन साहित्यकारों की सूची से ही यह किताब आधी से अधिक भरी–पड़ी है। इनका परिचय देते समय नलिन जी ने आचार्य रामचंद्र शुक्ल की ही पद्धति को अपनाया है। जिसमें प्रत्येक कवि का जन्म–स्थान, जाति और रचनाएँ निर्दिष्ट हैं।

सारांशतः नलिन विलोचन शर्मा ने आलोचना के क्षेत्र में मनुष्य और समाज सापेक्ष साहित्यिक दृष्टि का असाधारण दृष्टांत प्रस्तुत किया है। भारतीय और पश्चिमी साहित्यशास्त्र के गहरे ज्ञान के कारण उनकी आलोचना में परम्परा और आधुनिकता, भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि का सम्यक् संतुलन देखने को मिलता है। वे भारतीय साहित्य की महान विरासत को छोड़ने के पक्ष में नहीं थे। नलिन ने सर्वप्रथम साहित्य के इतिहास दर्शन पर काम किया। उन्होंने संतुलित दृष्टिकोण से साहित्येतिहास लेखन कैसे किया जाए ? इस सवाल को साहित्येतिहास लेखकों के सामने रखा। उन्होंने पाश्चात्य विचारकों के संकुचित दृष्टिकोण का विरोध करते हुए भारतीयों में इतिहास दृष्टि होने का समर्थन किया। नलिन जी ने भारतीय दृष्टिकोण तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण में संतुलन का आग्रह किया। उन्होंने इतिहास लिखने की दिशा में किंवदंतियों और मिथकों को महत्त्वपूर्ण माना है। साहित्येतिहास में गौण कवियों को जगह देने का आग्रह किया है। 'साहित्य का इतिहास दर्शन' पुस्तक में उन्होंने लगभग 16 अध्यायों में साहित्येतिहास लेखन पर विचार किया है। यह पुस्तक साहित्येतिहास लेखन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण बिंदु की तरह है जो संतुलित इतिहास लेखन का समर्थन करती है। यह पुस्तक 1960 के आस–पास लिखी गयी थी। तब का समय शब्दों के प्रयोग को लेकर जटिल समय था जिसका प्रभाव इस पुस्तक पर भी दिखाई पड़ता है। इसमें कठिन शब्दों की अधिकता है। फिर भी, यह कहना गलत न होगा कि यह पुस्तक साहित्येतिहास लेखन में एक नयी खोज है।

संदर्भ सूची

1. साहित्य का इतिहास दर्शनएनलिन विलोचन शर्माएबिहार राष्ट्रभाषा परिषद् एपटना।